1.

ये दौलत नहीं चाहिए मुझे न ये शोहरत चाहिए।
मेरे सनम मुझे बस आपकी मोहब्बत चाहिए।

महल शीशों के हैं, देखते हैं रोज़ अपने आप को,
इन तरसती निगाहों को सनम की सूरत चाहिए।

2.

जाने क्यों लोग कहते हैं
कि वक़्त ठहर गया।
यहाँ तो देखते देखते
ज़िन्दगी का सफ़र गया।

एक एक करके सारे
मुक़ाम निकल गये,
हम न उतरे कहीं पे,
हर कोई उतर गया।

3.

इस क़दर आपने हमसे मोहब्बत की।
दिल में रहे और दिल से बग़ावत की।

मेरे सनम मंजूर है हर सज़ा आपकी दी हुई,
इसी तरह ही सही मुझ पर इनायत की।

4.

ख़ुदा करे मेरे लफ़्ज़ों में ऐसा एहतिमाम हो जाए।
दिल में छुपे हैं जो राज़ सरे आम हो जाए।

आजकल फ़ुर्सत नहीं हमें बस एक ही काम से,
के मोहब्बत की दुनिया में हमारा भी नाम हो जाए।

5.

इतनी फ़ुरसत है किसे आज के ज़माने में।
वक़्त बहुत लगता है बीती बातें दोहराने में।

ज़िन्दगी के सफ़र में जब नये लोग मिल जाते हैं
तो देर कहाँ लगती है बिछड़ों को भुलाने में।

6.

कोई काम भी नहीं रहता
और फ़ुर्सत भी नहीं मिलती।
इस बेक़रारी के आलम से
दिल को राहत भी नहीं मिलती।

ऊब चुके हैं मेरे सनम
ये रोज़ रोज़ के कामों से,
दिल चाहे करने को जिसे
वो क़यामत भी नहीं मिलती।

7.

लतीफ़ों की तरह हर बात हँस हँस कर उड़ा दी,
भरा रहता ग़ुबार तो दिल को आराम न मिलता।

अच्छा हुआ के हँस के जुदा हो गए मेरे सनम,
वरना तुझे याद करने का हमें काम न मिलता।

8.

माँग ली है ये दुआ रब से उम्र भर के लिए।
दूर जायें न आप हमसे पल भर के लिए।

दूर गये आप तो बस इतना समझ लीजिए,
तैयार हो गये हैं हम क़ब्र भर के लिए।

9.

आज क्या गुज़रा मानो मुझ पर सितम हो गया।
एक और दिन मेरी ज़िंदगी का लो कम हो गया।

हसरत एक भी पूरी न हुई तेरी सोहबत में रह के,
बात इतनी सी थी जो ज़िंदगी भर का ग़म हो गया।

10.

यों हँस हँस के दिखाते हैं
ज़माने को मेरे सनम।
तुम्हें क्या ख़बर क्या राज़
छुपा है इन मुस्कुराहटों के पीछे।

तुम भूल गए हमें तो
कोई ग़म की बात नहीं।
हम तो परेशान हैं अपनी
न भूलने की आदतों के पीछे।